श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त - २०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. इससे आश्चर्यचकित होकर राजा ने भी जैनधर्म स्वीकारा और वो......................बना।
२. सर्वविरति का घात करने वाले................ कषाय के उदय से सर्वविरति ग्रहण करने का सत्व उत्पन्न नहीं होता।
३. .... गोचरी साधु की आराधना में वृद्धि करने वाली बनती है।
४. कालपूर्ण होने से पहले भी बुद्धिपूर्वक.............. किया जा सकता है।
५. .... जीव के हृदय में जिनभक्ति के साथ साथ गुरुभक्ति भी बसी हुई रहती है।
६. भव्य जीव को आनंद देने वाला तथा.................. की परंपरा का मूल कारण रुप है।
७. तत्व और धर्म को जानने के बाद......................गुणस्थान में यह प्रवृति मंद बन जाती है।
८. आहार प्राप्त करने श्रावक के आगे दीनता प्रकृट करे वो .... दोष कहलाता है।
९. कषाय है वहां संसार है और संसार है वहाँ कषाय है, इसी कारण अपना संसार .... से चलता आ रहा है।
१०. उन्हें याद करने वाले के ....विपत्तियां और दुःख नाश हो जाते है।
११. रागद्वेष के कटु परिणाम का चिंतन उसकी विचारणा करना वह .... धर्मध्यान है।
१२. किसी के पास से छिनकर लायी हुई वस्तु आहार आदि साधु को वोहरावे वो .... कहलाता है।
१३. वायुकाय में उत्तर वैक्रिय की रचना और .... दोनों स्वयंमेव हो जाते है।
१४. .... लेने की इच्छा से कहीं दोषो का सेवन नहीं हो जाय उसकी भी चिंता करनी चाहिये।
१५. नरक गति में भय और.................. विशेष होती है।
१६. जीवो को किलामणा करके जो आहार आदि बनाने में आये तो वो............... कहलाता है।
१७. पांच प्रकार के प्रमाद सहित का जो साधु जीवन वह.................... है।
१८. .... उत्पन्न होने के जो कारणभूत पुद्गल है वे द्रव्यलेश्या है।
१९. साधु के निमित से बाजार में से कोई भी वस्तु खरीदकर लाये और साधु को वोहराये वो .... कहलाता है।
२०. कितनी ही वस्तुये हमारे उपयोग में कभी भी आती नहीं है फिर भी .... उसका त्याग भी नहीं कर पाते है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. उत्कृष्ट देशविरतिधर श्रावक किसका त्यागी होता है ?
२. वज्रमुनि ने क्या जानकर भिक्षा नहीं स्वीकारी ?
३. साधु को आहार आदि वोहराने से कौनसा पुण्य बंधता है ?
४. किसके उपद्रव करने पर भी पार्श्वनाथ प्रभु ध्यान से चलित नहीं हुए ?
५. लेश्या याने जीव का क्या ?
६. घर में बनायी हुई रसोई में से साधु को बोहराने के निमित्त से रसोई अलग निकालकर रखे वो कौनसा दोष है ?
७. अहिंसा के प्रतिपालक के रुप में कौनसे राजा प्रसिद्ध है ?
८. कौनसे सूत्र में श्रावक और साधु से लगते दोषो का वर्णन आता है ?
९. इन्द्र महाराजा की प्रदक्षिणा के कारण पर्वत क्या कहलाया ?
१०. सभी जीव किसके दास है ?
११. अभक्ष्य, अकल्प्य, अयोग्य वस्तु जो लेना साधु को कल्पे नहीं वो ग्रहण करे तो कौनसा दोष लगता है ?
१२. अर्धचन्द्रकार के आकार वाले संस्थान कौनसे होते है ?
१३. चौदह राजलोक के स्वरुप का चिंतन करना वह कौनसा धर्मध्यान है ?
१४. शास्त्रो ने साधु को विधिपूर्वक आहार ग्रहण करने की बात क्या टिकाये रखने के लिये कही है ?
१५. कौनसी गति में परिग्रह एवं लोभ संज्ञा विशेष होती है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. जुवइहिं २) विगला ३) रिक्ख ४) वषटकर्म ५) विउव्वाव्वणाकालो ६) द्यालम्बनो ७) ताणं ८) नाणाविह ९) णंमंसियं
१०. पयडं ११) चउरंसा १२) अव्रतो १३) तीर्वोदये १४) निहाणं १५) असंघयणा १६) अेअस्स १७) कारा
१८. पसमेउ १९) श्राद्ध २०) मणुआणं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) पृथ्वीकाय	१) श्रीदेवी	६) देशविरतिधर	६) दुष्ट ग्रह
२) जहर	२) सेवार्त	७) हिमवंत पर्वत	७) शोकचिन्ता
३) छर्दित	३) अनंतकाय	८) पद्मलेश्या	८) अफीम
४) कुस्वप्न	४) पीलावर्ण	९) स्वरसुकंद	९) अर्धचन्द्राकार
५) आर्तध्यान	५) उन्मिश्र	१०) विकलेन्द्रिय	१०) अनुकंपा

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. देशविरतिधर श्रावक जो परिणाम की धारा से साधु जैसा हो वह जघन्य से कौनसे भव में मोक्ष प्राप्त करता है ?
२. स्तोत्र के मध्य में कितने अक्षरो से युक्त मंत्र है ?
३. ज्योतिषचक्र के देवो को छोडकर शेष सभी दंडको को कितनी लेश्या होती है ?
४. वज्रस्वामी को पाटलीपुत्र के धनश्रेष्ठी ने कितनी जायदाद देनी चाही ?
५. चतुर्थ गुणस्थान में रहे हुए जीव की कितनी प्रकृति उदय और उदीरणा में होती है ?
६. मनुष्य द्वारा बनाया गया उत्तर वैक्रिय शरीर कितनी मिनीट तक टिक सकता है ?
७. साधु,साध्वी,श्रावक, श्राविका को कुल कितनी वस्तुये लेना कभी भी नहीं कल्पता ?
८. सब मिलाकर कुल कितने दोष है जो गोचरी को अशुद्ध करते है ?
९. तेउकाय कितनी लेश्या वाले होते है ?
१०. देशविरति गुणस्थान में कितनी प्रकृति का बंध होता है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. देशविरतिधर जब सर्वविरति का स्वीकार करते है तब छठ्ठे गुणस्थान से सातवें पर आते है ।
२. तिर्यंचों को विशेषता से आहार और मान संज्ञा होती है ।
३. इस स्तवन के कर्ता श्रीमेरुतुंग आचार्य के पाप का तीन भुवन के जनों ने जिनके चरण पूजे है ऐसे श्रीपार्श्वनाथ भगवान शमन करो ।
४. नीललेश्या नीलवर्ण की और कम क्रूर परिणाम वाली होती है ।
५. शासन की उन्नति और जयजयकार के लिये वह रथयात्रा, संघपूजा, तीर्थयात्रा, महोत्सव आदि अनुष्ठान करता रहता है ।
६. माटी, पानी, सचित धान्य आदि का संघट्ट रही हुई अचित वस्तु स्वीकारे तो मृक्षित दोष कहलाता है ।
७. वज्रस्वामीने, सोपारक नगर में ईश्वरी नाम की स्त्री लक्षमूल्य वाले चांवल पकाकर उसमें जहर मिलाने का विचार कर रही थी, उसे अटकाया ।
८. चर्मचक्षु से हमें बादर एकेन्द्रिय के एक-एक जीव का कोई आकार या आकृति दिखती नहीं है ।
९. देशविरतिधर जैसे जैसे आराधना में आगे बढते है, वैसे वैसे रौद्र और आर्तध्यान मंद परिणामी बनता है ।
१०. पालाभाजी,मैथी, धनिया वगैरह का उपयोग चैत्र सुदी चौथ को कर सकते है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. अपने प्रमाद के लिये दुःख हुआ और अल्प आयुष्य है ऐसा जाना ।
२. नवकारसी से लेकर वरसीतप तक के तप को जानता है, सद्हणा करता है, प्रेरित करता है ।
३. ऐसे प्रकार की सूक्ष्म जानकारी हमे पाप से बचाती है, तथा पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतो का लाभ लेने में सहायक होती है ।
४. श्री पार्श्वनाथ प्रभु का स्मरण जो मन में करते है उन्हें व्याधि तथा महादुःख नहीं होता ।
५. यदि तुम श्रावक योग्य आहार बनाओ तो साधु कभी भी तुम्हारे घर से खाली हाथ नहीं जायेंगे ।
६. चार भांगे में प्रथम तीन भांगे अशुद्ध है, ऐसी वस्तु लेना साधु को नहीं कल्पता ।
७. द्विन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय और नारकी को हुंडक संस्थान होता है ।
८. अरिहंत परमात्मा की अपूर्वभक्ति उसके अंतर में बसी हुई रहती है ।
९. सब तैयार होने के बावजूद साधु-साध्वीजी भगवंतो को कल्पे (काम आये) ऐसी एक भी वस्तु नहीं होती...।
१०. इन्द्रिय द्वार सुगम है, मनुष्यों को सात समुद्घात होते है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. धर्मध्यान के कितने भेद है, उनमें से दो का संक्षिप्त में वर्णन कीजिये ? २) वज्रस्वामी की महाप्रभावकता के बारे में बताईये ?
३. साधु और श्रावक जागृत न हो तो कौनसे दोष लगते है, दो का वर्णन किजिये ? ४) संज्ञाद्वार के बारे में बताईये ?
५. स्तोत्र के प्रभाव से क्या क्या होता है ?

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com